रामनाथ बेख़बर

कोयल

माना कोयल काली है,
लेकिन बहुत निराली है।

रोज डाल पर आती है,
चहक-चहक कर गाती है।

डाल-डाल पर डोले है,
कू-कू-कू-कू बोले है।

मीठे-मीठे इसके बोल,
मन में जाते मिश्री घोल।

लगती सबको प्यारी है,
कोकिल राजदुलारी है।

चंदा मामा

चंदा मामा छत पर आना।
चमचम किरणों को छिटकाना।।

स्वर्ण कटोरा लेते आना।
उसमें भरकर दूध पिलाना।।

साथ हमारे हँसना गाना।
चन्द्र लोक की कथा सुनाना।।

देर रात तक रंग जमाना।
सुबह-सुबह फिर वापस जाना।।

कहते हैं चुनमुन के नाना।
मुश्किल है चंदा को पाना।।

 ISSN:2583-8849